

## बूढ़ा आदमी युवा पत्नी और चोर-पंचतंत्र

किसी ग्राम में किसान दम्पती रहा करते थे। किसान तो वृद्ध था पर उसकी पत्नी युवती थी। अपने पति से संतुष्ट न रहने के कारण किसान की पत्नी सदा पर-पुरुष की टोह में रहती थी, इस कारण एक क्षण भी घर में नहीं ठहरती थी। एक दिन किसी ठग ने उसको घर से निकलते हुए देख लिया।

उसने उसका पीछा किया और जब देखा कि वह एकान्त में पहुँच गई तो उसके सम्मुख जाकर उसने कहा, “देखो, मेरी पत्नी का देहान्त हो चुका है। मैं तुम पर अनुरक्त हूँ। मेरे साथ चलो।”

वह बोली, “यदि ऐसी ही बात है तो मेरे पति के पास बहुत-सा धन है, वृद्धावस्था के कारण वह हिलडुल नहीं सकता। मैं उसको लेकर आती हूँ, जिससे कि हमारा भविष्य सुखमय बीते।” “ठीक है जाओ। कल प्रातःकाल इसी समय इसी स्थान पर मिल जाना।”

इस प्रकार उस दिन वह किसान की स्त्री अपने घर लौट गई। रात होने पर जब उसका पति सो गया, तो उसने अपने पति का धन समेटा और उसे लेकर प्रातःकाल उस स्थान पर जा पहुँची। दोनों वहाँ से चल दिए। दोनों अपने ग्राम से बहुत दूर निकल आए थे कि तभी मार्ग में एक गहरी नदी आ गई।

उस समय उस ठग के मन में विचार आया कि इस औरत को अपने साथ ले जाकर मैं क्या करूँगा। और फिर इसको खोजता हुआ कोई इसके पीछे आ गया तो वैसे भी संकट ही है। अतः किसी प्रकार इससे सारा धन हथियाकर अपना पिण्ड छुड़ाना चाहिए। यह विचार कर उसने कहा, “नदी बड़ी गहरी है। पहले मैं गठरी को उस पार रख आता हूँ, फिर तुमको अपनी पीठ पर लादकर उस पार ले चलूँगा। दोनों को एक साथ ले चलना कठिन है।”

“ठीक है, ऐसा ही करो।” किसान की स्त्री ने अपनी गठरी उसे पकड़ाई तो ठग बोला, “अपने पहने हुए गहने-कपडे भी दे दो, जिससे नदी में चलने में किसी प्रकार की कठिनाई नहीं होगी। और कपडे भीगेंगे भी नहीं।”

उसने वैसा ही किया। उन्हें लेकर ठग नदी के उस पार गया तो फिर लौटकर आया ही नहीं। वह औरत अपने कुकृत्यों के कारण कहीं की नहीं रही।

सीख : अपने हित के लिए गलत कर्मों का मार्ग नहीं अपनाना चाहिए।

## गुह्य सुहृद्भी युवा पत्नी त्वा गेह-पंगुत्तु

किमी गृह मे किमान सुहृद्भी रत्न करतुं च। किमान ते वृद्धा वा  
पर उमकी पत्नी युवती थी। सुपते पति मे मंडुक्त न रत्ने के कारण  
किमान की पत्नी मत्त पर-पुरुष की ऐतु मे रत्नी थी, उम कारण  
एक वृत्त ही अर मे नलीं उरती थी। एक दिन किमी उग ने  
उमके अर मे निकलते हुए दौप लिया।

उमने उमका पीछा किया त्वा एव दौपा कि वरु एकानु मे  
पहुँच गये ते उमके मभूप एकर उमने करा,  
“दोपे, मेरी पत्नी का दौकातु के मुका है। मे उम पर सुनरकुं कं।  
मेरे भाष गले।”

वरु गेली, “यदि तिमि की गतु है ते मेरे पति के पाम गुरु-भा  
एन है, वृद्धा वभू के कारण वरु फिलतुल नलीं मकडा। मे उमके  
लेकर मुती कं, एममे कि रुभारा रुविधु मापभय गीते।”  
“वीक है एत। कल प्रातःकाल उमी मभय उमी भूत पर मिल  
एना।”

उम प्रकार उम दिन वरु किमान की भू सुपते अर लौए गये। गतु  
हैने पर एव उमका पति मे गया, ते उमने सुपते पति का एन  
मभए त्वा उमे लेकर प्रातःकाल उम भूत पर ए पहुँची। ऐने  
वरु मे एल दौपा। ऐने सुपते गृह मे गुरुत एर निकल मुा च  
कि उही भाज मे एक गदरी नलीं मु गये।

उम मभय उम उग के मन मे विचार मुया कि उम त्वा के सुपते  
भाष ले एकर मे हु करुंगा। त्वा दिन उमके पिण्डु रुमु केरे

उभके पीछे मु गघा डे वैमे ही मंकए की कै। मउः किभी प्रकार उभमे  
भार एन रुषियाकर मपना पिः कुराना एाफिर। वरु  
विपार कर उभने कर, “नमी गरी गरुगी कै। परले मै गंगी  
के उभ पार राप मुउ रुं, छिर दुभके मपनी पी० पर लाकर  
उभ पार ले मलंगा। ऐने के एक भाष ले मलना कठिन कै।”  
“ठीक कै, रिभा की करो।” किमान की भी ने मपनी गंगी उभे  
पकरां डे ०ग गैला, “मपने परने कर गरुने-कपरे ही टै टै,  
एभमे नमी मे मलने मे किभी प्रकार की कठिनं नही देगी।  
एर कपरे हीगंगे ही नही।”

उभने वैभा की किय। उने ले कर ०ग नमी के उभ पार गघा डे  
छिर लेएकर मुघा की नही।  
वरु एरउ मपने कुकुट्टे के कार कही की नही रही।

भीप : मपने छिउ के लिए गलउ कने का भाज नही मपना न  
एाफिर।

मनुवाए - कुलमीप एर